त्रयोदशी व्रत कथा (Pradosh Vrat Katha)

Pradosh Vrat Ki Katha: त्रयोदशी की कथा किंवदंतियों की एक अनूठी कड़ी है। एक ब्राह्मणी थी, जिसके पति का स्वर्गवास हो गया था। वह और उसका पुत्र दिनचर्या में भिक्षा मांगकर अपनी जीवन यात्रा को आगे बढ़ा रहे थे। एक दिन, ब्राह्मणी ने एक घायल राजकुमार को पाया, जो विदर्भ का था। उसके पिता को बंदी बनाकर उसके शत्रुओं ने उसका राज्य हड़प लिया था। ब्राह्मणी ने उसे अपने घर ले जाकर उसकी देखभाल की।

ब्राह्मणी प्रदोष व्रत की अनुष्ठान करती थीं। एक दिन, एक गंधर्व राजकुमारी, अंशुमति, ने राजकुमार को देखा और उससे प्रेम हो गया। अंशुमति के माता-पिता ने भी राजकुमार को पसंद किया और उन्होंने अपनी बेटी की शादी उससे कर दी। इसके बाद, राजकुमार ने गंधर्व सेना और ब्राह्मणी के आशीर्वाद की सहायता से अपने शत्रुओं को हराया और उसने अपना राज्य वापस प्राप्त कर लिया। राजकुमार ने ब्राह्मणी के पुत्र को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

त्रयोदशी व्रत की कथा भक्ति और अनुष्ठान की शक्ति को उजागर करती है। ब्राह्मणी की अडिग आस्था ने राजकुमार को उसके राज्य को वापस पाने में मदद की। इसी प्रकार, भगवान शिव अपने भक्तों पर अपनी कृपा बरसाते हैं, जैसा कि उन्होंने राजकुमार और ब्राह्मणी पर की।

www.janbhakti.in